Notes

6

सामाजिक समूह

पिछले पाठ में हमने समाज, समुदाय, समिति तथा संस्था की अवधारणा के बारे में पढ़ा है। अब तक यह स्पष्ट हो चुका है कि ये सभी शब्द एक समूह को इंगित करते हैं जिससे यह ज्ञात होता है कि मानव जाति किस प्रकार पारस्परिक सम्पर्कों में रहती है। यद्यपि, 'सामाजिक समूह' शब्द का विशिष्ट रूप से व्यवहार हम इसलिए करते हैं जिससे यह बताया जा सके कि व्यक्ति किस प्रकार पारस्परिक, सुसंगत तरीके से, एक बड़ी इकाई के रूप में रहता है। सामाजिक समूह वे आधारभूत इकाइयाँ हैं जिसमें व्यक्ति रहते हैं, अपना जीवन यापन करते हैं तथा एक अर्थपूर्ण अन्तःक्रिया स्थापित करते हैं। समाजशास्त्री इस अवधारणा का प्रयोग मानवीय समाज के कार्यों को समझने के लिए करते हैं।

आपने अनुभव किया होगा कि समाज में रहने वाला व्यक्ति अकेला नहीं रहता। उसे अपने आस-पास अन्य व्यक्तियों की आवश्यकता होती है जिनसे वह अपनी समस्याएँ, विचार तथा अनुभव बाँट सके। उसे मानव संगति की जरूरत होती है। अतः मानव जाति एक सामाजिक प्राणी है। वे समाज में रहते हैं। परंतु जैसा हमने पहले कहा है कि समाज एक अमूर्त (निराकार) अवधारणा है। इसे देखा नहीं जा सकता है। इसे सिर्फ इसके अस्तित्व द्वारा तथा व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित तथा अभिमुख करने वाले विभिन्न सामाजिक प्रतिमानों के प्रचलन द्वारा अनुभव किया जा सकता है। अतः अब हमारे सम्मुख प्रश्न यह उठता है कि यदि हम समाज को देख नहीं सकते तब हमारे लिए इसकी क्या सार्थकता है? इसी प्रसंग में 'समूह' की अवधारणा अर्थवान हो जाती है।

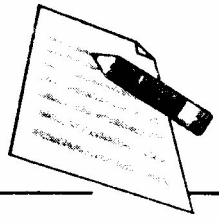

Notes

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होंगे कि:

- सामाजिक समूह की अवधारणा को परिभाषित कर सकेंगे;
- सामाजिक समूह की विशेषताओं को समझा सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के सामाजिक समूहों के उद्देश्य का समझा सकेंगे; और
- समूह, समाज, संस्था तथा समुदाय में अंतर कर सकेंगे।

6.1 समूह क्या है?

एक सामाजिक समूह, साधारणत:, ऐसे व्यक्तियों का समुच्चय है जो नियमित रूप से आपस में मिलते हैं। यह सामाजिक प्राणियों के मध्य सामाजिक संबंध स्थापित करता है। समूह समाज की इकाई है जिसमें समाज की सभी विशेषताएँ विद्यमान रहती हैं सिवाय केवल इस सत्य के कि समूह का अस्तित्व एक मूर्त (साकार) रूप में होता है। हम 'परिवार' जैसे एक समूह में रहते हैं। हम किसी वंश या गोत्र से संबंध रखते हैं। अत: समाजशास्त्रियों ने समाजशास्त्र को सामाजिक समूहों के विज्ञान के रूप में वर्णित किया है। सभी समाजों के व्यक्तियों के बीच कुछ रूपों में अन्त: क्रिया होती रहती हैं। जिनका कुछ अर्थ तथा उद्देश्य होता है। ये अन्त: क्रियाएँ सामूहिक रूप से होती हैं, और साथ ही ये पारस्परिक क्रियाएँ उन्हीं व्यक्तियों के बीच होती हैं जिनकी सामूहिक पहचान एक होती है। सामाजिक समूहों की प्रतिस्थापना में इन पहचानों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

6.2 सामाजिक समूह की विशेषताएँ

सामाजिक समूह के ऊपर दिये गए वर्णन एवं परिभाषा में निम्नलिखित विशेषताएँ पहचानी जा सकती हैं:

1. **व्यक्तियों की संख्या:** किसी भी समूह में कम से कम दो व्यक्तियों का रहना आवश्यक है।
2. **सदस्यता की संचेतना:** प्रत्येक सदस्य अपने समूह की सदस्यता के संबंध में सचेत है।
3. **संगठित संरचना:** प्रत्येक समूह संरचनात्मक रूप से संगठित है।

Notes

4. **अर्थपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण अन्त:क्रिया:** सदस्यों के बीच सुनिश्चित अर्थ एवं उद्देश्य के लिए अन्त: क्रिया होती है।

5. **अपनत्व की भावना:** समूह में 'हम' की भावना हो।

6. **सामूहिक लक्ष्य एवं रुचि हो:** समूह के सदस्यों का प्राय: एक ही लक्ष्य होता है तथा इसी की प्राप्ति के लिए कार्य करते हैं। जैसे - किसी क्रिकेट क्लब के सदस्य क्रिकेट खेलकर मैच जीतने के लिए आपस में प्रतिबद्ध रहते हैं।

7. **समूह प्रतिमान:** प्रत्येक समूह का अपना नियम या प्रतिमान होता है जिसे सदस्यों को पालन करना होता है।

8. **सापेक्ष्य स्थायी स्वरूप:** प्रत्येक समूह सापेक्ष्य रूप से स्थायी होते हैं।

9. **नामपद्धति:** अधिकांशत: प्रत्येक समूह किसी नाम द्वारा जाने जाते हैं।

10. **पारस्परिक संबंध:** किसी समूह के सदस्य परस्पर एक दूसरे से संबंधित रहते हैं। उदाहरणस्वरूप, किसी परिवार के सभी सदस्य नातेदारी विशेष द्वारा आपस में जुड़े होते हैं।

6.3 कुछ संबद्ध शब्द

सामाजिक समूह को समझने के लिए हमें कुछ संबंधित शब्दों को जानना आवश्यक है जो निम्नलिखित हैं-

1. **समष्टि** - यह व्यक्तियों का एक ऐसा संकलन है, जिनके मध्य अन्योन्यक्रिया नहीं है। जैसे सड़क पर जाते हुए व्यक्ति समष्टि का उदाहरण हो सकते हैं।

2. **भीड़** - किसी निश्चित समय पर यह व्यक्तियों का एकत्रीकरण है। जैसे, हम अक्सर देखते हैं कि हमारे पड़ोस में काफी संख्या में व्यक्ति एकत्रित होकर नुक्कड़ नाटक देखते हैं। यह एकत्रीकरण भीड़ कहा जाता है। भीड़ दो प्रकार की होती है:

    1. **सक्रिय भीड़**- व्यक्तियों द्वारा नाटक के किसी रोचक प्रसंग को देखकर ताली बजाना।

    2. **निष्क्रिय भीड़**- काफी संख्या में व्यक्तियों द्वारा स्थानीय बाजार में खरीदारी करना।

संवर्ग - यह व्यक्तियों का ऐसा समूह है जिनमें कुछ सामान्य विशिष्ट लक्षण होते हैं जैसे समान लिंग तथा समान आय।

अब, आइए देखें कि एक सामाजिक समूह ऊपर दिए गए शब्दों से कैसे भिन्न है।

सामाजिक समूह व्यक्तियों का संगठित समुच्चय है जिन्हें सदस्यता की चेतना होती है तथा वे बगैर किसी विशिष्ट उद्देश्य के संगठित हाते हैं। यद्यपि, भीड़ या संवर्ग की तुलना में यह अधिक स्थायी होता है। इसमें 'समाज' की सभी विशेषताएं होती हैं परन्तु इसी धारणा के द्वारा हम समाज की एक साकार रूप में संकल्पना करते हैं।

चित्र-1: *परिवार-एक समूह*

पाठगत प्रश्न 6.1

अपने उत्तर एक वाक्य में दें:

अ. सामाजिक समूह से आप क्या समझते हैं?

ब. क्या समूहों को 'सामाजिक संरचना थी ईंट' कहा जा सकता है, यदि हाँ तो कैसे?

स. क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि समाज समूहों द्वारा बनता है?

द. 'समूह' का एक उदाहरण दीजिए।

6.4 समूहों के प्रकार

समाज, समूहों द्वारा निर्मित होता है तथा ये विभिन्न प्रकार के होते हैं। इनमें आपस में कुछ समानताऐं और कुछ भिन्नताऐं होती हैं। सामाजिक समूहों को समझने के लिए

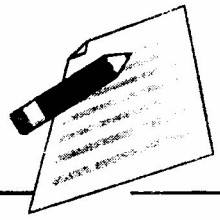

Notes

समाजशास्त्रियों ने इसे विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया है। कुछ समूह प्राकृतिक रूप से बनते हैं जैसे बच्चों का प्राकृतिक रूप से सदस्य के रूप में परिवार में आना। अन्य प्रकार के समूह जैसे कुछ व्यक्तियों द्वारा क्रिकेट दल का गठन करना तथा स्वयं इसका सदस्य बनना। यह तथ्य हमें ध्यान में रखना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति समाज में विभिन्न समूहों का सदस्य है। यद्यपि कुछ समूह ऐसे होते हैं जो व्यक्ति के निजी दायरे में आते हैं; जैसे परिवार तथा नातेदार समूह आदि, जबकि अन्य, व्यक्ति के सार्वजनिक जीवन का भाग होते हैं जैसे किसी क्लब अथवा राजनीतिक दल की सदस्यता।

> परिवार एक समिति के रूप में एक समूह है जबकि एक संस्था के रूप में समूह नहीं है।

कुछ समाजशास्त्रियों ने यह सुझाव दिया है कि समूह के वर्गीकरण में आकार को एक मापदण्ड माना जा सकता है। उदाहरण के लिए पति-पत्नी, दो व्यक्ति भी समूह बनाते हैं जिसे 'युगल' कहा जाता है। वहीं दूसरी तरफ एक दूसरे प्रकार के समूह के रूप में 'त्रयी' है जिसमें तीन लोग होते हैं और ऐसे समूह भी हो सकते हैं जिसमें काफी ज्यादा संख्या में लोग रहते हैं, इसका एक उदाहरण युवा दल है।

एक जर्मन समाजशास्त्री एफ. टोनी ने दो मुख्य प्रकार के समूहों की बात की है:

जैमिनशाफ्ट अर्थात समुदाय; तथा

जैसिल्शाफ्ट; अर्थात समिति।

किसी औपचारिक नियम की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति में समूह को औपचारिक या अनौपचारिक समूह में परिभाषित किया जा सकता है जैसे - परिवार एक अनौपचारिक समूह है जबकि विद्यालय एक औपचारिक समूह है।

संबंधों की प्रकृति के आधार पर समूहों को प्राथमिक, द्वैतीयक तथा तृतीयक समूह में, वर्गीकृत किया जाता है।

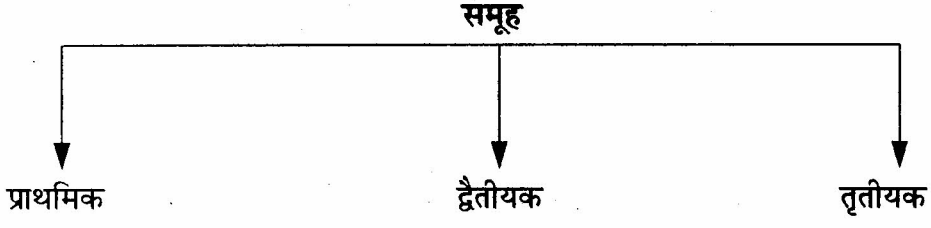

Notes

6.4.1 प्राथमिक समूह

जहाँ समूहों में प्रत्यक्ष संपर्क तथा घनिष्ठ संबंध हो जैसे परिवार या छोटे गाँवों में रहने वाले लोग वह प्राथमिक समूह होता है। प्राथमिक समूह तथा अन्य समूह (अब जिसे द्वैतीयक समूहों के रूप में जाना जाता है) मूलभूत अवधारणा के अंग हैं। किसी भी समाज की सामाजिक संरचना का प्राथमिक समूह एक महत्वपूर्ण अंग हैं। प्राथमिक समूह की बाह्य विशेषताएँ हैं:

- छोटा आकार
- प्रत्यक्ष संपर्क
- भौतिक समीपता

जबकि प्राथमिक समूह की अन्त: विशेषताएँ हैं:

- 'हम' की भावना
- परोपकारिता- समूह के लिए सदभाव
- स्वत: वृद्धि
- स्थायी स्वरूप
- संबंध साध्य होते हैं, साधन नहीं
- अनौपचारिक सामाजिक प्रतिमानों की प्राबल्यता तथा वैयक्तिक संबंधों में भावनात्मक प्रगाढ़ता रहती है।

6.4.2 द्वैतीयक समूह

जहाँ संबंध अवैयक्तिक होते हैं वहाँ प्रत्यक्ष संपर्क नहीं होता है; यह द्वैतीयक समूह कहा जाता है। जैसे- राजनीतिक दल, जाति अथवा श्रम, संघ द्वैतीयक समूह के बाह्य विशेषताएँ हैं:-

- **आकार में बड़ा**- रेड क्रास सोसायटी के सदस्य पूरी दुनिया में हैं।
- **अप्रत्यक्ष संबंध**- सदस्य आपस में अप्रत्यक्ष माध्यम से संपर्क करते हैं जैसे- पत्र, फैक्स, तथा फोन आदि।
- **लक्ष्य जनित**- इस समूह का मुख्य कार्य होता है किसी विशिष्ट जरूरत को पूर्ण करना।
- **अवैयक्तिक संबंध**- सदस्य आमने-सामने नहीं मिलते परंतु फिर भी कार्य को पूरा करते हैं।

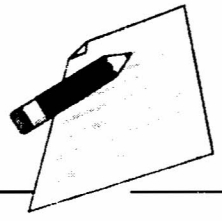

- **सदस्यता का विकल्प**- सदस्यता बाध्य नहीं होती है। कोई भी रोटरी क्लब या रेड क्रास सोसायटी का सदस्य बन सकता है।

प्राथमिक तथा द्वैतीयक समूहों में भेद

विशेषताएँ	प्राथमिक समूह	द्वैतीयक समूह
आकार	छोटा	बड़ा
संपर्क की अवधि	अतिकालिक रहता है।	अल्पकालिक
समीपता का स्वरूप	ज्यादा; आमने-सामने	कम
रुचि का स्वरूप	विसरित	विशिष्ट
संबंधों का स्वरूप	घनिष्ठ	अवैयक्तिक
ज्यादा पाए जाते हैं	ग्रामीण समाज में	शहरी समाज में

6.4.3 तृतीयक समूह

ये समूह समान लक्षणों वाले अनेक समूहों से बनते हैं और इनका संपर्क अथवा अन्त:क्रिया प्रकृति से मात्र वैचारिक होती है। जैसे श्रम-संगठनों का परिसंघ जो कई संगठनों से बनता है।

पाठगत प्रश्न 6.2

अपने उत्तर एक वाक्य में दें:

1. संबंध के स्वरूप के आधार पर समूह के तीन वर्गीकरण कौन-कौन से हैं?

   ---

2. आप किस प्रकार के समूह में आमने-सामने का संबंध पाते हैं?

   ---

3. राजनीतिक दल किस प्रकार के समूह में आते हैं?

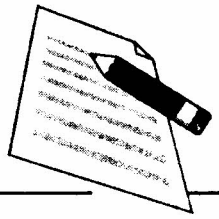

Notes

6.5 समूह की संरचना

संरचना के आधार पर समूह का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से होता है--

क्षैतिज समूहः व्यक्तियों (सदस्यों) का वैसा संपूर्ण संगठित समूह जो बिना क्रम--परंपरा के परस्पर मिलते हैं, क्षैतिज समूह कहा जाता है। उदाहरण के लिए मित्रों या साथियों का समूह।

ऊर्ध्वाधर समूहः व्यक्तियों का वह संपूर्ण संगठित समूह जो क्रम-परंपरा की चेतना के साथ परस्पर मिलते हैं उदाहरण के लिए वर्ग, जाति तथा नौकरशाह (अधिकारी वर्ग) भारतीय समाज में जातियाँ सदैव उर्ध्वाधर रीति से संगठित रहती हैं।

अन्तः समूह तथा बाह्य समूहः अनुभूति के आधार पर अन्तः समूह तथा बाह्य समूह के बीच विभेद किया गया है। अन्तः समूह का तात्पर्य व्यक्तियों के वैसे संपूर्ण समूह से है जो अन्तः समूह में परस्पर भाईचारे की भावना (समूह के अन्दर एकात्मकता) से मिलते हैं। ये सदस्य कुछ अन्य समूहों, जो बाह्य समूह कहे जाते हैं, के प्रति द्वेष तथा श्रेष्ठता-हीनता की भावना रखते हैं। अन्तः समूह सदैव बाह्य समूह का मूल्यांकन अपनी संस्कृति के आधार पर करते हैं। अतः श्रेष्ठता तथा हीनता का आयाम उत्पन्न होता है। इस संचेतना की पहचान ईथनोसैट्रिज़्म (स्व समूहश्रेष्ठता) के रूप में की जाती है।

उदाहरण के लिए, किसी गाँव में उच्च जातियाँ तथा निम्न जातियाँ स्वयं के लिए अन्तः समूह हैं परन्तु एक दूसरे के लिए बाह्य समूह बन जाते हैं। सामान्य अर्थों में अन्तः समूह 'हम-समूह' तथा बाह्य समूह 'वे-समूह' कहे जाते हैं।

अनुभूति के आधार पर ये दोनों समूह अन्तर रखते हैं।

कुछ समाजशास्त्री संपर्क की अवधि के आधार पर दोनों प्रकार के समूहों में विभेद करते हैं, वह है, क्षणिक समूह अथवा संयोग समूह। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति, जो आपको एक बस पड़ाव पर मिलता है एक क्षणिक समूह है तथा स्थायी समूह वह है जो ज्यादा अवधि के लिए कायम रहता है, उदाहरण के लिए मित्र समूह।

समाजशास्त्रीय साहित्यों में हमें सदैव एक और अवधारणा मिलती है उसे 'संदर्भ समूह' कहा जाता है, जिसका प्रयोग सदस्यता-समूह के विपरीत किया जाता है। कोई व्यक्ति, जिस समूह से संबंध रखता है वह उसका सदस्यता समूह है। और संदर्भ समूह वह है जिसके प्रतिमान तथा आदर्शों का वह व्यक्ति अनुकरण करता है। इसका अर्थ है कि संदर्भ समूह वह है जिसको व्यक्ति अपने कार्यों एवं व्यवहार के लिए एक आदर्श के रूप में देखता है। वह हमेशा इस समूह का सदस्य बनना चाहता है। उदाहरण के लिए, किसी गाँव में गरीब कृषक मजदूरों के लिए, जमीन का स्वामित्व

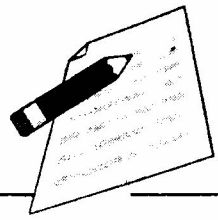

Notes

रखने वाले लोग संदर्भ समूह हैं। उसी प्रकार शिक्षित बेरोजगारों के लिए, वेतनभोगी वर्ग एक संदर्भ समूह है।

समूह 'खुले' अथवा 'बंद' स्वरूप के भी होते हैं।

'खुला' समूह वह है जिसकी सदस्यता ऐच्छिक होती है तथा सदस्यों की गतिशीलता संभव है। जैसे फुटबाल क्लब।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्धारण में समूह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

'बंद समूह' में सदस्यता सीमित रहती है तथा गतिशीलता अपेक्षाकृत कठिन होती है। जैसे- जाति समूह।

पाठगत प्रश्न 6.3

खाली स्थानों को इस भाग के उपयुक्त शब्दों से भरें:

1. क्षैतिज समूह का उदाहरण है ..... समूह।
2. जाति, वर्ग तथा नौकरशाही, उदाहरण है, ... समूह का।
3. शिक्षित बेरोजगारों के लिए, वेतनभोगी वर्ग एक ..... समूह है।
4. 'खुले' समूहों में सदस्यों की गतिशीलता ..... होती है।

6.6 समूह तथा समाज में अंतर

समूह	समाज
व्यक्तियों का संग्रह	सामाजिक संबंधों की व्यवस्था
एक कृत्रिम रचना	स्वाभाविक एवं प्राकृतिक विकास
समूह संगठित होता है।	समाज समूहों का अदृढ़ संग्रह है।
समूह अस्थायी हो सकते हैं	समाज स्थायी है।
समूह एक मूर्त संग्रह है।	समाज व्यक्तियों की मूर्त अवधारणा है।
समूह में 'हम' की भावना रहती है।	संबंधित रहने की भावना होती है।

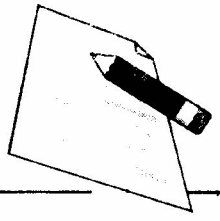

Notes

6.7 समूह तथा संस्था में अंतर

समूह	संस्था
समूह व्यक्तियों का संग्रह है।	यह उद्देश्यों पर आधारित कार्यकारी निकाय है।
समूह अस्थायी हो सकते हैं।	ये सदैव स्थायी होते हैं।

6.8 समूह तथा समुदाय में अंतर

समूह	समुदाय
समूह की रचना की जाती है।	ये स्वाभाविक रूप से बनते हैं तथा इन्हें बनाया भी जाता है।
समूह का निर्माण किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाता है।	समुदाय सदस्यों के संपूर्ण जीवन से संबंधित रहता है। उद्देश्य के लिए किया जाता है।
समूह, समुदाय का अंग है।	समुदाय में अनेक समूह रहते हैं।

इसी प्रकार अनेक प्रकार के समूह होते हैं जिनमें हम कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शामिल रहते हैं। यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम संस्कृति सीखते हैं, संस्कृति का व्यवहार करते हैं तथा संस्कृति बदलते हैं।

पाठगत प्रश्न 6.4

सही पर (✓) का चिह्न गलत पर (×) का चिह्न लगाएं:

1. 'हम' की भावना प्राथमिक समूह से संबंधित है।
2. समूह, मानक नियमों एवं प्रतिमानों से लक्षित होता है।
3. समूह में अनेकों समुदाय होते हैं।

आपने क्या सीखा

- सामाजिक समूह वह आधारभूत इकाई है जहां मानव निवास करता है।
- समूह समाज की इकाई है जिसमें समाज की सभी विशेषताएँ रहती हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति एक या एक से अधिक समूहों का सदस्य होता है जैसे- परिवार, मित्र समूह।
- समूह व्यक्तियों का संगठित संकलन है।
- प्रत्येक समूह में 'हम' की भावना रहती है।
- प्रत्येक समूह में आमने सामने का संबंध होता है।
- समाजशास्त्रियों ने अनेक प्रकार के समूहों की पहचान की है।

पाठान्त प्रश्न

1. प्राथमिक समूह तथा द्वैतीयक समूह में अंतर करें।
2. सामाजिक समूह की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. समूह तथा समुदाय में क्या अंतर है?
4. अपने शब्दों में 'अन्तः समूह' तथा 'बाह्य समूह' की व्याख्या करें।

शब्दावली

परोपकारिता - समूह के हित के लिए त्याग की भावना।

क्रम परंपरा (हायरार्की) - असमान संबंध।

पूर्वाग्रह - कनम में पहले से जमा कोई विचार जिसे बदलने के लिए व्यक्ति तैयार न हो

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. सामाजिक समूह का अर्थ उस मूलभूत इकाई से है जहाँ मनुष्य रहते हैं।

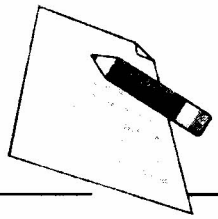

Notes

2. हां
3. हां
4. परिवार/राजनीतिक दल या उसी प्रकार।

6.2

1. प्राथमिक, द्वैतीयक, तृतीयक।
2. प्राथमिक
3. द्वैतीयक

6.3

1. मित्र
2. अर्ध्वाधर
3. संदर्भ
4. संभव

6.4

1. ✓ 2. × 3. ×

पाठ्य पुस्तकें

1. आर. एम. मैकईवर एंड वी. एच. पेम - 'सोशिऑलाजी' 1985
2. टी. एम. बोटामोर - 'सोशिऑलाजी' 1972
3. एन्थोनी गिडिन्स - 'सोशिऑलाजी' 1993
4. सी. एच. कूले - 'सोशल ऑर्गनाइजेसन' 1909
5. आर. के. मॅर्टन - 'सोशल थ्योरी एंड सोशल स्ट्रक्चर' 1968